राष्ट्रीय एकता सेमिनार विशेषांक

Indian Council of Social Science Research

मासिक समाचार पत्र

परिसर

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

"सरदार पटेल के लिए सर्वोपरि था राष्ट्र"

- तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल में हुए राष्ट्रीय एकता सेमिनार में बोले प्रो. बलदेव भाई शर्मा
- सरदार पटेल की एकात्म दृष्टि, पत्रकारिता के दायित्व और भारत की सांस्कृतिक आत्मा पर मंथन

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) द्वारा प्रायोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय एकता सेमिनार

विषय

भारत के एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका एवं उनकी विचारधारा के उत्प्रेरक के रूप में मीडिया

11 राज्यों से रजिस्ट्रेशन

67 शोध पत्र प्राप्त हुए

परिसर संवाददाता

मेरठ। "सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय एकता के शिल्पकार थे। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि था। तमाम कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने जिस अदभुत इच्छाशक्ति और निर्णायक नेतृत्व के साथ भारत को एक सूत्र में बांधा, वह ऐतिहासिक है। यदि कश्मीर के मामले में पंडित जवाहरलाल नेहरू विशेष हस्तक्षेप न करते, तो सरदार पटेल पाक अधिकृत कश्मीर को भी भारत में शामिल कर चुके होते।" ये विचार प्रख्यात चिंतक, लेखक और कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर बलदेव भाई शर्मा ने तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल और आईसीएसएसआर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय एकता सेमिनार में व्यक्त किए।

सेमिनार का विषय था– भारत के एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका एवं उनकी विचारधारा के उत्प्रेरक के रूप में मीडिया। सेमिनार के उद्घाटन सत्र में प्रो. शर्मा ने कहा कि सरदार पटेल के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ का कोई स्थान नहीं था। उनका दृष्टिकोण व्यापक, राष्ट्रीय और दूरदर्शी था। उन्होंने 500 से अधिक देशी रियासतों का भारत में एकीकरण कर एक ऐसे राष्ट्र की नींव रखी, जो आज मजबूत, सशक्त और समरस है।

हिंदी पत्रकारिता दिवस के अवसर पर आयोजित इस दो दिवसीय संगोष्ठी में प्रो. शर्मा ने कहा कि पत्रकारिता केवल समाचारों का संप्रेषण भर नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रहित और समाजोत्थान का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा, "जो पत्रकार जीवन भर सीखने की जिज्ञासा रखता है, वही वास्तव में अच्छा पत्रकार बन सकता है।" उन्होंने जोर देकर कहा कि पत्रकारों को अध्ययनशील बने रहना चाहिए, क्योंकि ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं है।

राष्ट्रीय सेमिनार में अपने विचार व्यक्त करते प्रोफेसर बलदेव भाई शर्मा (ऊपर) एवं सेमिनार की स्मारिका का विमोचन करते अतिथिगण और तिलक स्कूल के निदेशक व शिक्षक।

उन्होंने कहा कि भारत की विशेषता 'विविधता में एकता' केवल एक नारा नहीं, बल्कि हमारे सांस्कृतिक जीवन का मूल तत्व है। भारत ने सदैव संपूर्ण विश्व को बंधुत्व, सह–अस्तित्व और एकात्मता का संदेश दिया है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना भारत की आत्मा है, और आज भी यह भावना हमारे राष्ट्रीय चरित्र में जीवंत है।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला को अंगवस्त्र और सेमिनार की किट भेंट करतीं सेमिनार की संयोजिका डॉ. दीपिका वर्मा।

जनमानस की स्वाभाविक पसंद थे पटेल : राजेंद्र अग्रवाल

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे मेरठ–हापुड़ लोकसभा क्षेत्र के पूर्व सांसद राजेंद्र अग्रवाल ने कहा कि सरदार पटेल देश की जनता की स्वाभाविक पसंद थे। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्र भारत के निर्माण तक, उन्होंने अथक परिश्रम, समर्पण और संगठनात्मक दक्षता का परिचय दिया। उन्होंने कहा, "आज आवश्यकता इस बात की है कि सरदार पटेल के विरुद्ध खड़ा किया गया नकारात्मक नैरेटिव बदला जाए और देश की युवा पीढ़ी को उनकी वास्तविक भूमिका से परिचित कराया जाए।"

उन्होंने कहा कि हर नागरिक को सरदार पटेल की जीवनी पढ़नी चाहिए। उनका जीवन केवल एक राजनेता का नहीं, बल्कि एक सच्चे राष्ट्र निर्माता का जीवन है। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम क्षण तक राष्ट्रीय एकता के लिए अथक प्रयास किए। आज भारत को फिर से वैसी ही दृढ़ इच्छाशक्ति और राष्ट्रभक्ति की आवश्यकता है, जैसी सरदार पटेल में थी।

पटेल आयरन मैन ही नहीं, उत्कृष्ट प्रशासक भी थे : प्रो. सत्य प्रकाश

विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर सत्य प्रकाश गर्ग ने अपने संबोधन में कहा कि सरदार पटेल न केवल स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी थे, बल्कि आ. जादी के बाद भारत के पुनर्निर्माण में भी उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। वे संविधान के गहन ज्ञाता थे और विभिन्न महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य भी रहे। उन्होंने प्रशासनिक कुशलता, संगठन शक्ति और दूरदर्शिता का परिचय देते हुए यह सिद्ध किया कि क्यों उन्हें 'लौह पुरुष' कहा गया।

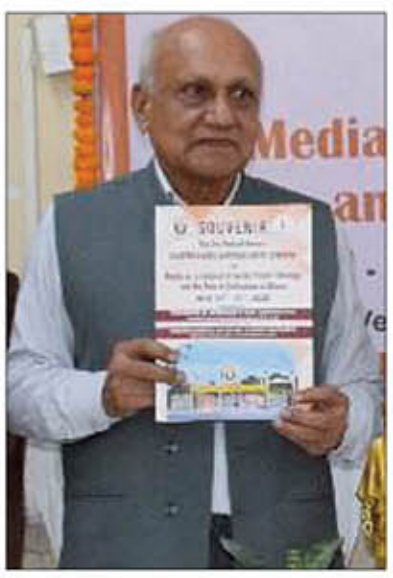

उन्होंने कहा कि जवाहर लाल नेहरू जहां सिद्धांतों में यकीन करते थे, वहीं सरदार पटेल व्यावहारिकता पर जोर देते थे।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के निदेशक प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने दिया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. दीपिका वर्मा ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत किया गया।

अभिभूत मेहमान : सेमिनार में सेवानिवृत्त इंजीनियर रमेश कुमार जैसे कई ज्ञान पिपासु अतिथि भी सम्मिलित हुए और विभिन्न वक्ताओं को सुना। अंत में उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया भी दी और आयोजन को बेहद सफल बताया।

शोध में भारत और भारतीयता को केंद्र बिंदु बनाएं

प्रथम तकनीकी सत्र

14

शोध पत्रों का वाचन किया गया

परिसर संवाददाता

मेरठ। दो दिवसीय राष्ट्रीय एकता से. मिनार के प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के सूचना एवं संचार तकनीकी विभाग की अधिष्ठाता बन्दना पांडेय ने की। प्रो० बन्दना पाण्डेय ने अपने संबोधन में कहा कि जब राष्ट्र कठिनतम दौर से गुजर रहा होता है तब उस विपरीत परिस्थितियों से निकालने के लिए लौह पुरूष का जन्म होता है। लौह पुरूष ही राष्ट्र के लिए आधार बनाने का कार्य करते हैं। उन्होंनें शोधार्थियों से कहा कि शोध करते समय इंडिया नहीं वरन् भारत और भारतीयता को केन्द्र बिंदु बनाना होगा। उन्होंने सत्र में वाचित शोध पत्रों का विवेचन करते हुए मार्गदर्शन दिया। उन्होंने शोध के तीन आधार नवीन जोड़ना, वस्तुस्थिति का विस्तार और पुरातन के चुनौती दिए जाने को बताया।

सत्र की बीज वक्ता जागरण लेकसिटी विश्वविद्यालय भोपाल के पत्रकारिता विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ० देबरती धर ने संचार को लोकतंत्र की प्राणवायु बताते हुए कहा कि शोध प्रक्रिया में विचार होना चाहिए किंतु उसकी औचित्यपूर्णता भी निहित होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शोधार्थियों को अपना शोध पत्र लिखते समय शोध के मानकों और मापदंडों का पालन करना चाहिए।

सत्र का संचालन शोधार्थी तनीषा माथुर ने किया। आभार ज्ञापन डॉ. हरिओम कुमार ने दिया। इस सत्र में 14 शोध पत्रों का वाचन किया गया।

राष्ट्रीय सेमिनार के प्रथम तकनीकी सत्र में शोध पत्र प्रस्तुतकर्ता से प्रश्न पूछतीं प्रोफेसर बंदना पांडेय। उनके दाएं हैं डॉ. देबरती धर और बाएं हैं डॉ. दीपिका वर्मा।

भ्रमण और सुझाव...

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो बलदेव भाई शर्मा ने विभाग का भ्रमण कर अपने सुझाव भी दिए।

प्रथम सत्र की बीज वक्ता डॉ० देबरती धर।

प्रथम सत्र की अध्यक्ष प्रो० बन्दना पाण्डेय।

प्रथम सत्र की सह अध्यक्ष डॉ. दीपिका वर्मा।

गीता में बताए देवत्व के 26 गुण पटेल में कूट–कूटकर भरे थे

परिसर संवाददाता

मेरठ। दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे तकनीकी सत्र का विषय था– समकालीन भारत में सरदार पटेल की विचारधारा।

इस सत्र में आईसीएसएसआर से पधारीं डॉ. कुमकुम पाठक ने कहा कि श्रीमदभागवद गीता में देवत्व के जो 26 गुण बताए गए हैं, वे सरदार पटेल में कूट–कूटकर भरे थे। निर्भयता उनके व्यक्तित्व का प्रमुख गुण थी, जिसके बल पर वे भारत को एकता के सूत्र में बांधने में सफल रहे। वीर भोग्या वसुंधरा की उक्ति को चरितार्थ करते हुए पटेल ने इस वसुधा को अपने प्रयासों से भोग्य बनाया।

उन्होंने कहा कि पटेल का चिंतन ऋग्वेद से राष्ट्र की अभिप्रेरणा प्राप्त करता है।

इस तकनीकी सत्र की अध्यक्षा गलगोटिया विश्वविद्यालय में प्रोफेसर ताशा परिहार ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि शोधार्थियों को शोध विधि, उद्देश्य, परिकल्पना और आंकड़ों के एकत्रीकरण और विश्लेषण की उपयुक्त विधियों का प्रयोग करते हुए शोध पत्र लिखना चाहिए।

दूसरे तकनीकी सत्र की बीज वक्ता डॉ. कुमकुम पाठक।

दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्ष प्रोफेसर ताशा परिहार।

सह अध्यक्षीय उद्बोधन में इतिहासकार डॉ. राजेन्द्र कुमार ने विविध ऐतिहासिक पक्षों से परिचय कराते हुए बताया कि सरदार पटेल भारत के बिस्मार्क के रूप में जाने जाते हैं।

उन्होंने कहा कि वर्तमान संदर्भों में पटेल के विचारों की प्रासंगिकता से सहजता से उनकी दूरदर्शिता को समझा जा सकता है।

इस सत्र में 11 शोध पत्रों का वाचन किया गया। दूसरे तकनीकी सत्र का संचालन शोधार्थी कपिल कुमार ने किया। आभार ज्ञापन डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने किया।

द्वितीय तकनीकी सत्र

11

शोध पत्रों का वाचन किया गया

स्वागत, सम्मान...

सेमिनार के उद्घाटन सत्र में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर बलदेव भाई शर्मा को सरदार पटेल की प्रतिमा भेंट करते तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के निदेशक प्रोफेसर प्रशांत कुमार और मेरठ के पूर्व सांसद राजेंद्र अग्रवाल। साथ में हैं सीसीएसयू के विधि विभाग के पूर्व अधिष्ठाता प्रोफेसर सत्यप्रकाश गर्ग और तिलक स्कूल के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव।

संरक्षक : प्रोफेसर संगीता शुक्ला (कुलपति), **मुख्य संपादक** : प्रोफेसर प्रशांत कुमार, **संपादकीय सलाहकार** : डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, डॉ. दीपिका वर्मा, डॉ. बीनम यादव, **संपादक** : लव कुमार सिंह, **संपादकीय टीम** : बीएजेएमसी और एमएजेएमसी के छात्र–छात्राएं।

अथक परिश्रम : सेमिनार संयोजिका डॉ. दीपिका वर्मा के नेतृत्व में शोधार्थियों और छात्रों की टीम ने इस बड़े आयोजन की जिम्मेदारी बहुत कुशलतापूर्वक निभाई।

पटेल कहते थे शांति की बात शक्ति के साथ करनी चाहिए

तृतीय तकनीकी सत्र

13

शोध पत्रों का वाचन किया गया

तीसरे तकनीकी सत्र में अपना शोध प्रस्तुत करते शोधार्थी।

परिसर संवाददाता

मेरठ। राष्ट्रीय सेमिनार में 30 मई के तीसरे और अंतिम तकनीकी का विषय था– सरदार पटेल– राष्ट्रीय एकता के प्रतिष्ठित व्यक्ति। इस सत्र में बीज वक्तव्य रखते हुए अंग्रेजी पत्रिका 'आर्गनाइजर' के सम्पादक प्रफुल्ल केतकर ने अपनी ओजस्वी अभिव्यक्ति में विविध ऐतिहासिक पक्षों का रहस्योद्घाटन करते हुए तथ्यों की भ्रामकता से परिचय कराया।

उन्होंने कहा कि विंस्टन चर्चिल, क्लेमेंट एटली और माउन्टबेटन ने भारत के विभाजन को तय किया। उनका उद्देश्य भारत को खंडित और लहूलुहान कर आजादी देना था।

प्रफुल्ल केतकर ने कहा कि सरदार पटेल का कहना था कि शक्ति के साथ शान्ति की बात करनी चाहिए, क्योंकि शक्तिशाली की ही बात सुनी जाती है। पटेल का मानना था कि जिसकी मानसिकता असंतुष्टि की हो वह सुधर नहीं सकता।

प्रफुल्ल केतकर ने बताया कि 7 अप्रैल 1949 को पटेल ने नेहरू को पत्र लिखते हुए कहा था कि यदि कश्मीर के विषय को संयुक्त राष्ट्र संघ में लेकर गए तो भारत को पछताना पड़ेगा। आज पटेल की बात अक्षरशः सही साबित हो रही है।

उन्होंने कहा कि पटेल ने भारत का एकीकरण किया, लेकिन अखंड भारत की संकल्पना अभी भी अधूरी है। उन्होंने पटेल की दूरदर्शिता, टैक्स निर्धारण नीति, स्पष्टवादिता, सम्यक राष्ट्रीय दृष्टि पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने प्राचीन भारत की प्रजामंडल व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए बताया कि अलग–अलग राज्यों के बाद भी राष्ट्र के रूप में भारत एक ही था। उन्होंने देश के मानस पटल से दासता के भाव को दूर करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मूल पत्रों और सन्दर्भ ग्रन्थ को पढ़कर ही अपने शोध पत्र और रिपोर्ट तैयार करना चाहिए।

सह अध्यक्षीय संबोधन में जे.सी. बोस विश्वविद्यालय फरीदाबाद से पधारे प्रोफेसर पवन मलिक ने सरदार शब्द को परिभाषित करते हुए उसे स्मार्ट, एकाउंटेबिलिटी, रिफ्रेशिंग, डेडिकेशन, एडाप्टेबल और रीजनेबल से जोड़ा। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल से प्रेरणा लेते हुए हमें अपने गिलहरी प्रयत्नों में जुटे रहना चाहिए।

अध्यक्षीय उद्बोधन में सीसीएसयू के इतिहास विभाग की प्रोफेसर आराधना गुप्ता ने कहा कि विकृत इतिहास भ्रामक नैरेटिव गढ़ता है। उन्होंने परदा प्रथा और सती प्रथा के उदाहरणों से इसे स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि इतिहास में काफी विसंगतियां है, जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है।

इस सत्र में 13 शोध पत्रों का वाचन किया गया। सत्र का संचालन ललितांक जैन ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने दिया।

तीसरे सत्र के बीज वक्ता प्रफुल्ल केतकर।

तीसरे सत्र के सह अध्यक्ष डॉ. पवन मलिक।

तीसरे सत्र की अध्यक्ष डॉ. आराधना गुप्ता।

सत्र संचालक

तनीषा माथुर, प्रथम सत्र

कपिल कुमार, द्वितीय सत्र

ललितांक जैन, तृतीय सत्र

अक्षिता शर्मा, चतुर्थ सत्र

सुरेंद्र अधाना, पंचम सत्र

पटेल जो कहते थे वही उनका आशय होता था

परिसर संवाददाता

मेरठ। भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) के सहयोग से तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन चौथे और दिन के पहले तकनीकी सत्र का विषय 'सरदार पटेल के उद्देश्य, आकांक्षाएं तथा वर्तमान सरकार' रहा। इस सत्र में भारतीय जनसंचार संस्थान नई दिल्ली के प्रोफेसर प्रमोद कुमार ने अपने बीज वक्तव्य में सरदार पटेल के संचारक पक्षों से अवगत कराया।

उन्होंने पटेल के व्यक्तित्व और उनके स्पष्ट विचारों पर प्रकाश डालते हुए पटेल के सहायक रहे वी. शंकर की पुस्तक के हवाले से बताया कि सरदार पटेल जो कहते थे, वही उनका आशय होता था और उनका जो आशय होता था, वही वह कहते थे। उनका एकमात्र मापदंड यही था कि कोई घटना देश हित में है अथवा नहीं।

चौथे तकनीकी सत्र में ऑनलाइन शोध पत्र प्रस्तुत करती शोधार्थी।

उन्होंने कहा कि पटेल देश के पहले सूचना एवं प्रसारण मंत्री थे और हिंदी भाषा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता की आवश्यकता को महसूस करते हुए वर्ष 1949 में प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रोफेसर कुमार ने कहा कि आज जब हम भारत को सशक्त होते देख रहे हैं, तो लगता है कि सरदार पटेल का सपना साकार हो रहा है।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की पत्रकारिता विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर शुचि यादव ने राष्ट्रीय एकता की अवधारणा को एक जीवंत और ठोस भावना बताया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय एकता कोई खोखला नारा नहीं बल्कि एक व्यवहारिक ताकत है। उन्होंने 'इंटरडिसीप्लिनरी' दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि आज के समय में अपने विचारों को ठोस और सुस्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। उन्होंने कश्मीर समस्या का उल्लेख करते हुए कहा कि यदि प्रारंभिक समय में दूरदर्शिता से निर्णय लिया जाता, तो समस्या गंभीर रूप न लेती। इस सत्र में सात शोध पत्रों का वाचन हुआ। सत्र संचालन अक्षिता शर्मा ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन शोधार्थी कपिल कुमार ने किया।

चतुर्थ सत्र

07

शोध पत्रों का वाचन किया गया

चौथे सत्र के बीज वक्ता प्रोफेसर प्रमोद कुमार।

चौथे सत्र के सह अध्यक्ष प्रोफेसर प्रशांत कुमार।

चौथे सत्र की अध्यक्ष प्रोफेसर शुचि यादव।

एक नजर में : शोधार्थी आदित्य देव त्यागी ने पांचवें सत्र की समाप्ति के बाद समापन सत्र में बेहद कुशलतापूर्वक दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

पटेल के सर्वांगीण व्यक्तित्व के अध्ययन की आवश्यकता

पंचम तकनीकी सत्र

09

शोध पत्रों का वाचन किया गया

परिसर संवाददाता

मेरठ। राष्ट्रीय सेमिनार के पांचवें और दिन के अंतिम सत्र में बीज वक्ता सीसीएसयू के विधि विभाग के पूर्व अधिष्ठाता प्रोफेसर सत्य प्रकाश गर्ग ने अपने संबोधन में कहा कि विगत 75 वर्षों में मीडिया ने सरदार पटेल के योगदान को वह स्थान नहीं दिया, जिसके वे वास्तविक रूप से अधिकारी थे। उन्होंने कहा कि यदि मीडिया ने अपने दायित्व को ठीक से निभाया होता, तो आज सरदार पटेल के योगदान को बताने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

उन्होंने कहा कि सामान्य तौर पर भारतीय जनमानस पटेल के व्यक्तित्व के कुछ ही पक्षों से परिचित हो सका है। उन्होंने पटेल के सर्वांगीण व्यक्तित्व के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि पटेल का संविधान को ड्राफ्ट कराने में महत्वपूर्ण योगदान रहा। आजादी के आंदोलन में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही।

सहअध्यक्षीय संबोधन काशी हिंदू विश्वविद्यालय के विधि विभाग से पधारे डॉ. विवेक कुमार पाठक ने दिया। उन्होंने वर्तमान परिदृश्य में समीचीन विषय एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर संगोष्ठी विषय चयन एवं आयोजन हेतु साधुवाद जताया।

उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि सरदार पटेल की राष्ट्र निर्माण में विस्तृत दृष्टि एवं चिंतन के विकास को समर्पित उनकी व्यापक दृष्टि सराहनीय है। उन्होंने पटेल की राष्ट्र निर्माण में भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि पटेल ने हमेशा मातृभाषा को प्राथमिकता दी और रामराज्य की कल्पना को साकार करने की दिशा में कार्य किया। संविधान के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के साथ-साथ उसके नियमन में भी योगदान उल्लेखनीय है।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए सीसीएसयू के अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर अतवीर सिंह ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम, संविधान निर्माण और स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार में सरदार पटेल की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। उन्होंने कहा कि नेहरू और पटेल के विचारों में भिन्नता अवश्य थी, लेकिन दोनों एक-दूसरे का सम्मान करते थे। उन्होंने कहा कि नेहरू दूरदर्शी थे तो पटेल व्यावहारिकता के पक्षधर थे।

इस सत्र में कुल नौ शोध पत्रों का वाचन हुआ। सत्र का संचालन शोधार्थी सुरेंद्र कुमार अधाना ने किया। आभार ज्ञापन शोधार्थी तनीषा माथुर ने प्रस्तुत किया।

पांचवें तकनीकी सत्र में बोलते बीज वक्ता और उपस्थित शिक्षक, शोधार्थी और छात्र-छात्राएं।

पांचवें सत्र के बीज वक्ता प्रोफेसर सत्य प्रकाश गर्ग।

पांचवें सत्र के सह अध्यक्ष डॉ. विवेक कुमार पाठक।

पांचवें सत्र के अध्यक्ष प्रोफेसर अतवीर सिंह।

सांस्कृतिक संध्या में गीत, नृत्य और कविता की धूम

मेरठ। राष्ट्रीय सेमिनार के पहले दिन उद्घाटन और तीन तकनीकी सत्रों के पश्चात शाम को एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया गया। यह आयोजन विभाग में नवनिर्मित ओपन थिएटर के मंच पर हुआ। इसमें विभाग और विश्वविद्यालय के अन्य विभागों के विद्यार्थियों ने देशभक्ति के गीत और नृत्य की प्रस्तुति दी। इस दौरान सभी छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त विभाग के निदेशक प्रोफेसर प्रशांत कुमार, डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, डॉ. दीपिका वर्मा, लव कुमार सिंह, डॉ० बीनम यादव, शोधार्थी, बाहर से आए अतिथिगण आदि उपस्थित रहे।

सफल आयोजन : 11 राज्य, 67 शोध पत्र, 125 प्रतिनिधि और 24 विशेषज्ञ

परिसर संवाददाता

मेरठ। तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का सफल समापन रविवार 31 मई को अपराह्न हुआ। सेमिनार का आयोजन भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) के सहयोग से किया गया। सेमिनार का मुख्य विषय था- भारत के एकीकरण में सरदार पटेल की विचारधारा एवं उनकी भूमिका के उत्प्रेरक के रूप में मीडिया की भूमिका। इस संगोष्ठी में 11 राज्यों के 125 प्रतिभागियों ने भाग लिया और 67 शोध पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से 54 पढ़े गए। 24 विषय विशेषज्ञ के रूप में विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं वरिष्ठ पत्रकारों ने सरदार पटेल जी के व्यक्तिव के विभिन्न आयामों पर व्याख्यान दिए।

समापन सत्र

समापन सत्र में मुख्य वक्ता अशोक चौधरी ने सरदार पटेल के ऐतिहासिक योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि 565 में से 552 रियासतों का भारत में विलय सरदार पटेल की दूरदृष्टि, कूटनीति और राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का परिणाम था। उन्होंने बताया कि नेहरूजी सरदार पटेल का इतना सम्मान करते थे कि उन्होंने इस कठिन कार्य के लिए स्वयं सरदार पटेल को ही नियुक्त किया। अशोक चौधरी ने बताया कि पटेल एक किसान परिवार से आते थे, लेकिन उनके कार्य सिद्धांत और ईमानदारी ने उन्हें भारत का लौह पुरुष बना दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रोफेसर अशोक कुमार ने कहा कि आजादी से पहले और आजादी के बाद दोनों ही दौर में सरदार पटेल की भूमिका अद्वितीय थी, और यही कारण था कि उन्हें स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार में गृह मंत्री बनाया गया। सत्र का संचालन डॉक्टर मनोज कुमार श्रीवास्तव ने किया और समापन पर प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों और आयोजकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस दौरान सेमिनार संयोजिका डॉक्टर दीपिका वर्मा के अतिरिक्त लव कुमार सिंह, डॉ बीनम यादव, मितेंद्र कुमार गुप्ता, राकेश कुमार, ज्योति वर्मा, उपेश दीक्षित और विभाग के सभी छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

समापन सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन करते प्रोफेसर अशोक कुमार।